Bhajan

07

मैं नहीं मेरा नहीं

मैं नहीं मेरा नहीं, यह तन किसी का है दिया,
जो भी मेरे पास है, वो धन किसी का है दिया ॥

देने वाले ने दिया वो भी दिया किस शान से,
मेरा है यह लेने वाला कह उठा अभिमान से,
मैं मेरा यह कहने वाला मन किसी का है दिया ॥

जो मिला है वह हमेशा साथ रह सकता नही,
कब बिछुड़ जाये ये कोई राज़ कह सकता नही,
जिन्दगानी का खिला मधुवन किसी का है दिया ॥

जग की सेवा, खोज अपनी, प्रीति उनसे कीजिये,
जिन्दगी का राज़ है यह जानकर जी लीजिये,
साधना की राह पर साधन किसी का है दिया ॥

काहे राम से लौ न लगाई

काहे राम से लौ न लगाई,
तूने बिरथा उमर गंवाई ॥

रोग भोग का बस जीवन जीना,
राम भजन सतसंग नहीं कीन्हा,
बीत गई सो बीती उमरिया,
राम भजन अब कर ले तू भाई ॥
काहे राम से लौ न लगाई ...

जप तप से मन होता है निर्मल,
तन की बाती जलती है तिल तिल,
अंत समय कोई काम न आये,
एक राम ही होत सहाई ॥
काहे राम से लौ न लगाई ...

करें कृपा भगवन भक्तन पर,
स्नेह लुटाऐं सदा संतन पर,
बड़े दयालु हैं रघुवीरा,
दुखी जन की है पीर मिटाई ॥
काहे राम से लौ न लगाई ...

बिरथा उमर गंवाई तूने
बिरथा उमर गंवाई...

राम से लौ है लगाई
अब मैंने राम से लौ है लगाई

मन मतवाले, राम गुण गाले
जय राम जय राम जय जय राम ॥

मन मतवाले, राम गुण गाले,
भज ले तू श्री राम,
जय राम जय राम . . .

नाम में शक्ति, नाम में भक्ति,
नाम से बढ़कर, कोई न युक्ति,
ध्यान लगा ले, राम नाम का,
जीवन के हर पल और छिन में,
मुक्ति पाले, राम गुण गाले,
भज ले तू श्री राम ॥
जय राम जय राम . . .

चार दिनों की है, ये ज़िन्दगानी,
अब तो मुझे है बस राम धुन गानी,
नही भरोसा इन सांसो का,
जाने कब आ जाए बुलावा,
लगन लगा ले, राम गुण गाले,
भज ले तू श्री राम ॥
जय राम जय राम . . .

राम की प्रीत में रंग गया हूँ,
उसकी ही धुन में समा गया हूँ,
मस्ती में झूमूँ भूल के दुनिया,
जीवन नैया का है राम खिवैया,
ज्योत जगा ले, राम गुण गाले,
भज ले तू श्री राम ॥
जय राम जय राम . . .

प्रेम मुदित मन से कहो

प्रेम मुदित मन से कहो,
राम राम राम, राम राम राम,
राम राम राम, श्री राम राम राम ॥

पाप कटै दुख मिटै लेत राम नाम,
भव समुद्र सुखद नाव एक राम नाम ॥
प्रेम मुदित मन . . .

परम शांति सुख निधान एक राम नाम,
निराधार को आधार एक राम नाम ॥
प्रेम मुदित मन . . .

मात पिता बन्धु सखा सबहि राम नाम,
भक्त जनन जीवन धन एक राम नाम ॥
प्रेम मुदित मन . . .

मेरे तो बस एक ही राम

मेरे तो बस एक ही राम,
और न कोई मेरा धाम,
कण कण मेरा राम रहे,
राम में मेरा मन और ध्यान ॥

सागर सा गहरा है राम,
अम्बर सा फैला है राम,
मेरे इस छोटे से मन में,
रहता है बस केवल राम,
जन्मों का जन्म वही,
जीवों का जीवन है राम ॥

इक चर्म बिन्दु सा है मेरा राम,
वो सहज नाद मानस का है,
वो ज्ञान ध्यान विज्ञान सभी,
इक अनंत झरना रस का है,
सासों का वाहन है राम,
प्राणों का गायन है राम ॥

भीतर का अक्षर है राम,
बाहर की विसृत भाषा है,
है बीज मंत्र, है आदि सूत्र,
भाषाओं की परिभाषा है,
तेरे पथ की धूल मेरे,
माथे का चन्दन है राम ॥

मैया बरस बरस रस वारी

तू है जननी जगत की, जगमग ज्योति अनंत
तेरे सागर प्रेम का, पारावार न अंत

है तू माता मधुमयी, निज ममता दे दान
मनोमोहक सुगीत, महिमा करूँ बखान

मैया बरस बरस रस वारी ।

बूँद बूँद पर तेरी जाऊँ,
बार बार बलिहारि ॥

नदी सरोवर सागर बरसे,
लागी झरियाँ भारी,
मेरे आँगन क्यों न बरसे,
मैं क्या बात बिगारी ॥

तू बरसे मैं जी भर न्हाऊँ,
दोनो भुजा पसारी,
नयन मूँद कर नाचूँ गाऊँ,
अपना आप बिसारी ॥

राम राम राम राम